GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 4
July- August: 2025

"जंगली फूल" उपन्यास में स्त्री जीवन का यथार्थपरक चित्रण

आर. सरोजिनी
शोधार्थी (हिन्दी विभाग) गांधीग्राम ग्रामीण संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), गांधीग्राम, तमिलनाडु
sarojiniravi8@gmail.com 7448351839
डॉ.एम.सलीम बैग,
पीएचडी गाइड, विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, गांधीग्राम ग्रामीण संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), गांधीग्राम, तमिलनाडु
baigsaleemgri@gmail.com

परिचय :

डॉ. जोराम यालाम लिखित 'जंगली फूल' उनका पहला उपन्यास है। वे राजीव गांधी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में सहायक प्रोफेसर के रूप में काम करती है। 2012 में उन्होंने 'साक्षी है पीपल' नामक कहानी संग्रह लिखी जिसमें 9 लंबी कहानियाँ हैं और 2014 में लोक कथाओं का दूसरी कहानी संग्रह के लिखा।

इसके बाद गाय गेका की औरतें आई (संस्मरण), न्यीशी समाज भाषिक अध्ययन (शोध) और तानी कथाएँ अरुणाचल के तानी आदिवासी समाज की विश्वदृष्टे आदि लिखी है। "जंगली फूल" अरुणाचल में प्रचलित लोक कथा पर आधारित है जिसमें 26 मुख्य जनजाति समाज के प्रमुख निशी जनजाति के तानी पर लिखा गया है। इसमें सिर्फ जनजाति की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा समाज का चित्र प्रस्तुत न किया गया है है बल्कि उनके अंधविश्वास, युद्धों और रत्रियों पर अत्याचार करने वाले प्रथाओं को भी सवाल पूछती है। यह उपन्यास सुख-शांति से रहने वाले एक नए समाज को दिखाता है।

आदिवासी साहित्य आदिवासी समुदायों की संस्कृति, परम्परा और उनके द्वारा अपनाई जाने वाली प्रथाओं को अभिव्यक्त करता है। वे आदिवासियों द्वारा सामना की जाने वाली कठिनाइयों और समस्याओं को भी दर्शाते हैं। महिलाओं द्वारा लिखा गया साहित्य हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह आदिवासी जीवन के संघर्ष और चुनौतियों सहित उनके भविष्य को दर्शाता है। यह

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 4
July- August: 2025

ऐसे हाशिए पर पड़े समुदाय में महिलाओं द्वारा किए जाने वाले अन्याय और शोषण को व्यक्त करता है जो दैनिक जीवन की आधी सच्चाई को दर्शाता है।

स्त्री और मिथकीय संरचना :

इस पुस्तक की विशेषता यह है कि यह निशि समाज में प्रचलित एक लोक कथा पर आधारित है। कहानी एक पूर्वज तानी के बारे में है जो एक क्रूर व्यक्ति था, जिसकी कई पत्नियाँ थीं। उसने अपनी ताकत और ज्ञान का इस्तेमाल महिलाओं को हासिल करने के लिए किया। लेकिन लेखक ने तानी की एक नई तस्वीर बनाई है जो देखभाल करने वाला है और अपने आस-पास की महिलाओं से प्यार करके जीवन जी रहा है। वह चार मजबूत महिलाओं डोलियांग, सिमांग, आसीम और जीत से घिरा हुआ है। साथ ही वह लोगों की भलाई के लिए अपनी ताकत का इस्तेमाल करता है। इस प्रकार लेखक ने उत्तर पूर्व के आदिवासी समुदाय में प्रचलित अंधविश्वास, प्रथाओं और परंपराओं पर सवाल उठाया है। साथ ही, उन्होंने निशी समुदाय की सच्ची तस्वीर पेश की है और पूर्वोत्तर जनजाति की महिलाओं के जीवन में बदलाव की मांग की है।

स्त्री का सामाजिक यथार्थ :

उपन्यास में महिलाओं का चित्रण समाज में गहराई से व्याप्त है। महिलाएं आमतौर पर परिवार केंद्रित होती हैं और उन्हें समाज द्वारा बंधे हुए जीवन जीना होता है। वे मुख्य रूप से विवाह, घर चलाने और मातृत्व में योगदान देती हैं। उन्हें निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल नहीं किया जाता है। उपन्यास के पात्र ऐसी स्थितियों से पीड़ित हैं। रंगिया एक अन्य आदिवासी समुदाय की महिला है। उसे तानी ने अपने समुदाय के सदस्यों द्वारा किए गए अत्याचार से बचाया।

तानी की पत्नी असीम भी अपने देवर से परेशान है। उसे अपने पति के समुदाय में अपने आत्मसम्मान के लिए लड़ना पड़ा। तानी जंगल में सिमांग नाम की एक महिला से मिलती है। हालाँकि वह एक सरदार की पत्नी है, लेकिन उसे अपनी इच्छानुसार जीवन जीने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। इस प्रकार ऐसी महिलाएँ न केवल उत्पीड़न का प्रतिनिधित्व करती हैं, बल्कि वे ऐसे उत्पीड़न का विरोध भी करती हैं।

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 4
July- August: 2025

स्त्री का श्रम और उत्पादन में योगदान :

आदिवासी समुदाय में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है। महिलाएँ घरेलू कामों के साथ-साथ कृषि, पशुपालन, बुनाई, मछली पकड़ने और वन उत्पादों को इकट्ठा करने में भी भाग लेती हैं। वे अपने पारंपरिक कपड़े बनाने और अपने पारंपरिक भोजन तैयार करने जैसी सांस्कृतिक गतिविधियों में भी खुद को शामिल करती हैं। उन्हें पारंपरिक चिकित्सा का भी ज्ञान है। वे धार्मिक समारोहों और अनुष्ठानों में भी खुद को शामिल करती हैं। वे परिवार, समुदाय और पर्यावरण के बीच संतुलन बनाती हैं। इस उपन्यास में, तानी की बहन, डोलियांग ओबो की सबसे छोटी बेटी है। उसे जंगल में उपलब्ध औषधीय जड़ी-बूटियों और झाड़ियों के बारे में बहुत जानकारी है। उसके पास अपने कबीले के सभी लोगों के इलाज के लिए दवाइयाँ हैं। उसे बुखार से लेकर साँप के काटने तक के इलाज का ज्ञान है। वह आदिवासी समुदाय में अपने ज्ञान और अच्छे गुणों के कारण जानी जाती है। यायी और तानी की शादी की तैयारियों के दौरान भी महिलाओं ने खूब सारी मिठाइयाँ बनाईं। आटे में प्राकृतिक खाद्य रंगों को मिलाकर अलग-अलग रंग के खाद्य पदार्थ बनाए गए। उन्हें अलग-अलग आकार में बनाया गया। इस तरह की पारंपरिक प्रथाएँ भी ज़्यादातर आदिवासी महिलाओं द्वारा ही निभाई जाती थीं।

तानी जब अनाज की तलाश में निकलता है, तो उसकी मुलाकात सिमांग से होती है। वह अपने पति और बच्चों को छोड़कर उसके साथ उसके आदिवासी समूह में चली जाती है। वह उन्हें खेती की तकनीक भी सिखाती है। जनजाति के सदस्य उससे खेती की बारीकियाँ सीखते हैं। वे उसका शुक्रिया अदा करते हैं और शुरुआत में उसे गलत समझने के लिए माफ़ी भी माँगते हैं। साथ ही जब उन्होंने ज़मीन से एक छोटी सी फसल उगते हुए देखी तो लोग चिल्लाने लगे। इस तरह तानी की अपने आदिवासी समुदाय में गरीबी और भुखमरी को खत्म करने के लिए अनाज की तलाश सिमांग की मदद से पूरी हुई। इस तरह उपन्यास में चित्रित महिलाएँ न केवल अपने पारिवारिक दायित्वों को पूरा करती हैं, बल्कि वे आदिवासी समुदायों की रीढ़ हैं। उनका श्रम गहन और निस्वार्थ है और उन्हें उनके काम के लिए मान्यता नहीं मिलती। समाज में उनके काम को पुरुषों द्वारा दबा

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 4
July- August: 2025

दिया जाता है। वे अदृश्य हो जाती हैं। इस तरह लेखक आदिवासी समाज में बदलाव की ज़रूरत को सामने लाता है।

सांस्कृतिक संचरण में स्त्री की भूमिका :

आदिवासी समुदाय की मौखिक परंपरा गीतों, कहानियों, संस्कृति, परंपरा, कला और शिल्प, उनकी भाषा और कई अन्य चीजों को आगे बढ़ाकर आगे बढ़ती है। महिलाएं अपनी कहानियों के माध्यम से अपने बच्चों और नाती-नातिनों को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस प्रकार महिलाएँ आदिवासी समुदायों की आधारशिला हैं। हालाँकि वे "जंगली फूल" की तरह सहज होती हैं जो किसी देखभाल या बागवानी में नहीं उगती हैं। यह महिलाओं के स्वभाव और उनकी सुंदरता को दर्शाता है।

लेखिका जोरम यालम ने उनकी संस्कृति को लिया है और पीढ़ियों से पीड़ित महिलाओं की स्थिति पर सवाल उठाया है। उन्होंने एक ऐसी दुनिया की माँग की है जहाँ महिलाओं की राय को गंभीरता से लिया जाता है और निर्णय लेने में उनके दृष्टिकोण को समझा जाता है। यह आदिवासी समुदायों में महिलाओं की स्थिति को स्पष्ट करता है, जो पीढ़ियों से उनके अनकहे संघर्षों को बताते हुए उनकी खामोश चीख को प्रतिध्वनित करता है।

समकालीनता और स्त्री विमर्श में स्थान :

जोराम यालम द्वारा लिखित यह उपन्यास आदिवासी महिलाओं के संघर्षों को दर्शाता है। उन्होंने समाज की मान्यताओं और मानदंडों पर सवाल उठाया है जहाँ महिलाओं को केवल वस्तु माना जाता था। इस प्रकार यह आदिवासी महिलाओं की सामाजिक संरचना में स्थिति को दर्शाता है।

आधुनिक समय में सरकार आदिवासियों के कल्याण के लिए उनकी आजीविका में सुधार के लिए कई पहल कर रही है। हालाँकि भारत में कई नारीवादी आंदोलन प्रचलित हैं, लेकिन उन्होंने खुद को आदिवासी महिलाओं की समस्याओं से दूर रखा है। उन्हें स्वदेशी महिलाओं पर जोर देना चाहिए और उनके साथ बातचीत करके उनके उत्पीड़न को उजागर करना चाहिए। जोराम यालम द्वारा महिला पात्रों का चित्रण समुदाय और जंगल से घिरा हुआ उनका जीवन दिखाता है। उनका दैनिक

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 4
July- August: 2025

जीवन परिवार, प्रकृति और मानदंडों से जुड़े दायित्वों से भरा हुआ है। हालाँकि उन्हें उपन्यास में नायक के रूप में चित्रित किया गया है, लेकिन वे परिस्थितियों की शिकार हैं।

शादियों के दौरान, दुल्हन के समुदाय की महिलाओं को दुल्हन की ससुराल में मदद करने के लिए उपहार के रूप में दिया जाता है। साथ ही किसी भी तरह के उत्सव के दौरान, महिलाओं को भोजन, कपड़े और सजावट सहित सभी व्यवस्थाएँ करनी होती हैं। साथ ही अगर समुदायों के बीच कोई हमला होता है तो महिलाओं को मुख्य रूप से निशाना बनाया जाता है। जब तानी का भाई उस पर गुस्सा हुआ, तो उसने अपनी पहली पत्नी और उसके बच्चों को निशाना बनाया। उसने उसके साथ दुर्व्यवहार किया और बदला लेने के लिए बच्चों को मार डाला। ये कुछ ऐसे उदाहरण हैं जहाँ आदिवासी महिलाओं का जीवन प्रतिबिम्बित होता है।

निष्कर्ष :

इस उपन्यास में आदिवासी समुदायों में महिलाओं के जीवन को सामने रखा गया है। हिंदी साहित्य में, यह एक महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य है जो हमें भविष्य में महिलाओं के जीवन के बारे में चर्चा करने और उनके सुधार का रास्ता बनाने की अनुमति देता है। 'जंगली फूल' की महिलाएँ उन पारंपरिक मिथकों और कहानियों पर सवाल उठाती हैं जो उनके बिना लिखी गईं। वे प्रेम, संस्कृति और आत्मसम्मान के माध्यम से एक स्त्री-प्रेमी दुनिया लाना चाहती हैं। यह केवल एक दृष्टिकोण नहीं है, बल्कि यह आदिवासी जीवन का प्रकटीकरण प्रस्तुत करता है। यह आदिवासी महिलाओं के लिए इतिहास को फिर से लिखने का नया द्वार खोलता है।